मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 5

BMAF–001

स्नातक उपाधि कार्यक्रम

(बी. डी. पी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2025

बी.एम.ए.एफ.–001 : मैथिली में आधार पाठ्यक्रम

समय : 2 घण्टे अधिकतम अंक : 50

नोट : ***सभ*** *प्रश्नक उत्तर देब अनिवार्य। उत्तर तिरहुता* ***अथवा*** *देवनागरी लिपि मे दातव्य।*

---

1. एहि शब्दक देशज रूप लिखू : 5

(क) स्नान

(ख) सूर्य

(ग) चंद्रमा

(घ) पुष्प

(ङ) वृक्ष

2. एहि शब्दक पर्यायवाची लिखू : 5

(क) भाई

(ख) बहन

(ग) माता

(घ) घोड़ा

(ङ) बिल्ली

3. एहि शब्दक वाक्य बनाउ : 5

(क) देकुल

(ख) कनोजरि

(ग) उगहनि

(घ) काल्हुक

(ङ) बैदाइ

4. वाक्य बनबैत एहि कहौतक अर्थ स्पष्ट करू: 5

(क) घोघ तानव

(ख) मोन खनहन

(ग) बासन अजबारल

(घ) भण्डा फूटब

(ङ) रंग में भंग

5. ई पाबनि कहिया–कहिया मनाओल जाइछ : 5

(क) कोजगरा

(ख) दशमी

(ग) मधुश्रावणी

(घ) छठि

(ङ) जूड़शीतल

6. निम्नलिखित अवतरणक 150 शब्द मे व्याख्या करू : 7

करुणागार उदार प्राणपति, वन देल दोष लगाय रे।

देवर–दोष विधिक हम की कहु, जनि घर धर्म्म न न्याय रे।।

हमरहि हेतु दशानन मारल, कपिगण सङ्ग लगाय रे।

तखन पतिव्रत हमर देखल सभ, अनल मे गेलहुँ समाय रे।।

नैहर जौँ मिथिला चलि जायब, कहत बाप की माय रे।

पुरुष–परशमणि–कर हम सोपल, अमली कि नाम हँसाय रे।।

सिरिस सुमन बरु होय अशनि सन, अशनि तेहन भय जाय रे।

से बरु होय, होथि नहि अकरुण, अहँकाँ बड़का भाय रे।।

की कहब कहय योगि नहि रहलहुँ, भेलहुँ सबहिकाँ भार रे।

कतहु रहब जानकि जन कहते, श्रीरघुनन्दन–दार रे।।

अथवा

लक्ष्मी सौँ हरि कहल बुझाय। बड़ दुख सहलनि सुर–समुदाय।।

हम तनिकाँ देलहुँ वरदान। अचिरहि हरब रिपुक हम प्रान।।

अवधपुरी जयबाक विचार। लेब ततहि हम न अवतार।।

होयत प्रिये हमरहि की जाय। अहँ बिनु नहि कय सकब उपाय।।

चलु चलु भूतल प्राणपियारि। दुहु मिलि लेब असुर–संहारि।।

सुनि लक्ष्मी कहलनि बड़ वेश। उचित विचार कयल प्राणेश।।

लेल अयोध्या हरि अवतार। चारि अंशयुत राम उदार।।

लक्ष्मी अयलिह मिथिला भूमि। ऋद्धि–सिद्धि संग लयिलिह जूमि।।

7. 'पीयर अंकुर' शीर्षक निबंधक विषय–वस्तुसँ परिचय कराउ। 7

8. तीन सच शब्द मे कोनो **एक** साहित्यिक विभूतिक साहित्यिक परिचय कराउ : 7

(क) लालदास

(ख) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'

(ग) मनबोध

9. कोनो **एक** शीर्षक पर टिप्पणी लिखू : 4

(क) विज्ञानक चमत्कार

(ख) मातृभाषाक महत्त्व

(ग) अधिकार ओ कर्त्तव्य

× × × × ×